

२ संत १७ व्या षाठ द्वा श्रया श्रय को जुन

२ दारा य को नरा ना स्र जन य मि

मा पि ना मा स्र जन य रि मि

पर स य न जो स न मान ग

२४ ५ ११ ६ ४
पियो को मा ना

मा पि मि नि

२ ४ ५ ११ ६ ४

ASHA ARCHIVES

संस्कृत मंत्रावली

1084

ASHA ARCHIVES

ॐ नमः शिवायः ॥ कर्पूरं मधुमा नृस्यत्रय
त्रेहिनं सुन्दरामा कियकं वीरु नृमा तत्र त्रिपु
त्रहत्रव धृतिरुतं यजय नि न बागद्या नियद्यानि
चमुरवकृते गार्हस्त्यववाचः ॥ स्वच्छन्दं व्यक्तं
गार्हस्त्यववाचः ॥ १ ॥ ॐ नमः
नः ॥ सुन्दरामा नृस्यत्रय वीरु नृमा तत्र त्रिपु

कस्य ॥ ४ ॥ वच्चां च व क्रियुक्तं विधुत्र निवर्तितं न
यं वच्चां यम्भः तद्वा द वच्चां यम्भः तद्वा द वच्चां यम्भः
दयं थाऊयित्वा मातृत्वा ऊप नि समग्रं म हि
ल ताव यन्तः स्व नृपः । त ल द्वा लास्य ली ला कम
द ल द्वा मः काम नृपः त व नि ॥ ३ ॥ य य क वा
द यं वा रिय मयि व व त वी ऊ म त्यं न ग उ र्क त्वं

ना न्ना थाऊयित्वा सकल मयि सदा ताव य
भाऊप नि त वी नृपः त व नि विन्द विह न नि कम
लाव कु मु जं मु वि भू वा (द वी द वि मू ल
नृ ग ति मय ल म त्यं नृपः त व नि ॥ ४ ॥ गी
सनां वा द य क नृपः त व नि य त्रि ल स नृ ग ति मय
सुं वि नृपः त व नि य त्रि ल स नृ ग ति मय

इदि महाकाससूत्रं यस्य कांक्षा आयुः न निरुद्धः
नान्यपि कश्चिद्विशेषः ॥ १॥ निवारिष्यति हिः भवति वहस्य
स्ति निरुद्धः यत्र संकीर्णं यथायुक्तं विनायां ह्यवर्धः
युनिषां स नृणां मय निस्त्रयं नायि युवतीं सदा त्वां
यत्किं विदयि न त्वां य निरुद्धः ॥ ८॥ वदामस्तु किं वा ऊन
निवयस्य वेङ्कटं धिया न क्षणान्तापीत्यह निनयिनः

वह्निविह्वं तथा यि त्वं किं मुखं त्रयं नि वासा कमयि
न नदं न नृकं न नखं लूयं न नावः समं विन ॥ ९॥ स
मन्ना दायी नस्तु न नृकं न धृत्वा न वनी न ना स का न कं
यदि जयति रुक्मं वसन्तं विवासा त्वां आयु न गति
विदुः स त्वं वगं गतः समस्तः सिद्धो द्या नु वि विन
न नृजीवति कश्चिद्विशेषः ॥ १०॥ समा स्वस्ति नृणां नृय नि विप

त्रीणां यदि सदा वि वि त्वां आ य न्न नि भय महा का स
सूत्रा भा ग दा न स्व का न न ल वि ह न मान ख वि दू षः
क ना भू उ व ष्ठाः ह न व धू म हा सि धि नि व हा ॥ ११ ॥ य
सू न सं सा नं ऊ न नि ऊ ग नी या स य नि च्च सम सं कि त्या दि
यु स य नि च्च य सं ह न नि च्च न्न ग र्वां धा ना पि पि नु व न य
निः श्री य नि न पि मह आ पि प्रा यः स क ल म पि किं सो मि ह

व नी ॥ १२ ॥ न्न न क स व न्न ह व द पि क नी र्वा न नि व हा न्ति
मू हा क मा नः कि म पि न वि ज्ञा न कि य न मं स मा ना आ
मा धां ह नि ह न वि नि ष्ठा दि वि दू षः य य आ सि स्वे नं
न नि न स म हा न न्द नि न नां ॥ १३ ॥ ध नि पि की लालं गु
वि न पि स मी ना पि ग ग नं ल म का क त्या नी गि नि भ न म
जी का सि स क लां सु निः का न मा नः नि ऊ क न्न य मा

ममतिकं यत्तु मात्वं ह्यान हवमनू ह्यानमममनू॥
१५॥ मममनूः सत्तु गतिन विदुना दिव्यद्वनः स
हप्रंत्तु कान्ति निड गतिन वीर्यलक्ष समं । इयं सत्तु
सकं मन्मथि नव ध्यान निनमा महा काति स्तेन स
हवमि धमितीयनि वृष्ट॥ १५॥ गुरु संमार्क न्याः यनि
गतिन विदुन विदुनं समुत्त मध्याद्र विनन नि विना

यांकुड दिना समुद्रार्थ युष्मा मन्मथि सत्तु काति स
नमं गजा नूठा या नि कि निय नि वृष्टः सत्तु विदुनः ॥ १६
स्ययुष्टः संकीर्ण कृत्तु मधनू का मदिन महा युना का
यं ध्यायं जय नि पन मं वार व मन्म । संग न्वर्त्तु लोभो य नि नि
वक विदुना वृत्त न दी न दी नः यर्थ नू यन म पद सीनः
युष्टव निः ॥ १७॥ त्रिय क्षत्रयी ॥ गव मि वदु दिव्य नव

आशा आर्य

1.084

ASHA ARCHIVES

वेसा का ते सैह वा सुने राजा विल लोह पल
लदि का लेग या निद्रा

राजा कृत लेखिने म...
पत्र: कस मवि ३॥ प्र ज

२७

आशा आर्यवर्ध

1.084

ASHA ARCHIVES

वेसा का तैलुह वा सुने राजा विल लौह पल
लगा लदि का लेग या नि २॥

दनां महाकात्तनाञ्चैर्मदननसत्तावन्धनित्रगां समा
सक्तानकं स्वयमपि न गानन्दनित्रगाञ्जनायाश्च य
स्याञ्जननिसस्यास्मन्नहन् ॥ १८ ॥ सत्तां मास्तिस्वेनं य
त्तत्तमपि मार्जानमपि न यत्रं चोक्तुं मयं न नमहि वदं
यं द्वागमपि वा वसिन् यज्ञायामपि विन नगामस्य
वसगां सगासिद्धिः सर्वयुक्तियदमयुक्तायु हवति ॥ १९ ॥

म ४

वभीसक्तं मनु यज्ञयमिह विद्याभननगा दिवा मा
नयुष्मच्च नल कमलश्चाननियूनः यत्रं न कं न
निध्वनविनादनच मनुञ्जनासक्तं सस्यास्मन्नहन्
समानः किमिह स ॥ २० ॥ किं स्थापुं मातः सवन्तु समु
द्धानलञ्जन्ः स्यन्त्याख्यपादा म् यज्ञयुगलपूजा विधिय
तं निभाध्वं यज्ञा समयमपि वा यसु प ० नि प्रसा

हस्तपत्रं विविधेषु मन्त्रसमासीनमाङ्कनिकर्याद
नाङ्क॥३॥स्वरकषसंदर्भिकाकात्रमर्वसदाशवयन
निपुणद्विपाश्च।द्विपायं ननायातिसंसात्रपात्रं यत्र
यत्रथापितस्तेनमस्त॥४॥समानादिना न कस्यचन
कारिःपुलायुनकुसुमं द्वित्रीकं।नमीनंनथाष्ट
सर्वभुविदातं।यसन्नसदा नन्दसमिस्तनूर्यं॥५॥स

नासायुष्टं सन्दनयुतसाटं कित्रीठा विगाकश्चिन्नवि
म्यकर्म।सूत्रत्यनुत्रीकारिनामायगाङ्कं सम
स्तनस्तयुसूत्रावर्गं॥६॥सस्तननुसामृष्टगनुस
नं ऊवात्रागवात्राधनं वात्रहासं।नृतिव्याकसाभादि
मन्त्रानामासंमहात्रसूत्रकोमुलादात्रहासं॥७॥सूत्रता
द्रुदेनचित्तं वाद्रुद(नृ)म्यहुर्विभ्यस्तस्तकृष्णसंस्तुता

: 13 दा नार नारस क नं यी न व लुं पद द च्च नि र्दु न य या नि
 तामं ॥ ८ ॥ भि या म त दू म यु ति ति ग्वे का न्या भ त द्य
 व द र्बी द ल म्भ म तां ग्वे के ल उ द य ना म्ना ता पि ता
 य रि ता की गृ ह क्रा य त स्मे न म क्त ॥ ९ ॥ म प्री तं क स र्ग
 स र्ग वे म् व र्नी व य स्यं व नं स द्म र्ग यं शु व ॥ स म र्क
 प नि य म् हा क र्म मा हा म मि ष्ठा मि दूः ख न दू यं कि सा

स्थि २

हं ॥ १० ॥ उ न यं पि म्म श्री व हा जी व ना मः मृ म्म म हि मां सा
 हि न कं व संच न्द्र हा द व सी दा मि दी ना न क ॥ ११ ॥ कि म या
 पि रु क स या दा सि न र्वा ॥ १२ ॥ क र्म बा ह ना म्म स न म्म स
 व ग व थ वि म्म र्ग स र्ग म्म मि व धा वि वि ष्या ह स र्वा म
 स म्म म व र्मा वि रु मि पु हा दि क ना मि पु सी द ॥ १३ ॥ स य
 न य ना न च्च वि न्द्र वि ष्या म्ना न र्ग न ना थ ना ना य ॥

मि।यधनस्य मिषामिह क्वा हवन्तं तदा भदया भी सद्
वयसीद ॥ शुर्ग मयुयानं य १० य मु ह क्वाः समा धाय विह
हवन्तं म्ना न। सभा हं विहाया शु यू षा त्य सा दाः समा मि
त्यया मं वु र्ग त्य चू न त्वा ॥ ॥ निमी र्ग क ना चार्य विन वि
नं विष्णु वु र्ग म यु यान सा षं सम्यु र्ग ॥ ॥ ग र्ग ग र्ग ह व न्द
यू के ह व व न्द यो मार ग मा र्ध सि त य नि य ता यां ह दी न सं
म्यु र्ग ॥ सि वि तं क र्मा चार्य क र्म सि ह न ॥

